बिहार के स्कूलों में मार्गदर्शन और परामर्श प्रक्रिया में स्कूल नेताओं की भूमिका

School Leadership Academy

State Council of Education Research & Training, Bihar, Patna

बिहार के स्कूलों में मार्गदर्शन और परामर्श प्रक्रिया में स्कूल नेताओं की भूमिका

– श्री आदित्य नाथ ठाकुर

भूमिका :–

परामर्श एवं निर्देशन दोनों ही बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक है। यदि कोई समस्या नहीं भी है, तब भी भावी संभावनाओं, जरूरतों को ध्यान में रखते हुए, निर्देशन की व्यवस्था की जा सकती है, जैसे कैरियर मेला, विभिन्न पाठ्यक्रमों में अपेक्षित योग्यताएँ, शुल्क, अध्ययन केंद्र आदि की जानकारी। यह इसलिए भी जरूरी है क्योंकि 10वीं, 12वीं के विद्यार्थियों शीघ्र ही आत्मनिर्भर बनना चाहते हैं और चाहते हैं कि वे अपने जीवन की एक सही दिशा तय कर सके ताकि वह परिवार चलाने में आर्थिक रूप से मदद कर सकें। निर्देशन विद्यार्थियों को इस क्षेत्र में मदद कर सकता है। यहाँ पर स्कूल नेताओं की भूमिका बहुत प्रभावी हो जाती है। परामर्श मुख्यतः भावनात्मक समस्याओं के लिए दिया जाता है, जैसे– असफलताओं से डर, अनजाने भय, अवसाद, आक्रामकता, नशे की लत आदि। मार्गदर्शन व्यक्तित्व एवं सामूहिक रूप से दिया जा सकता है। कई बार बच्चों के निर्देशन और परामर्श के अपेक्षित परिणामों को प्राप्त करने के लिए उनके अभिभावकों, साथियों का भी निर्देशन एवं परामर्श किया जाता है। इससे हम विद्यार्थियों के जीवन की रक्षा कर सकते हैं और उनके भीतर आत्मविश्वास, सकारात्मक आत्म–धारणा का विकास कर सकते है। चूँकि स्कूल हेड (नेता) विद्यालय को नेतृत्व अदान करते हैं लेकिन उनकी भूमिका विविध प्रकार की होती

है। कभी वह परामर्शदाता होते हैं तो कभी निर्देशन की भूमिका में होते हैं। कभी समन्वयकर्ता के रूप में देखते हैं तो कभी उत्प्रेरक का भी भूमिका निभानी होती है।

उद्देश्य :–

- परामर्श एवं निर्देशन की समझ विकसित करना।
- परामर्श एवं निर्देशन द्वारा विद्यार्थियों को सामान्य एवं शैक्षणिक जीवन को उचित दिशा प्रदान करने के लिए विभिन्न तरीकों एवं उपायों की जानकारी प्रदान करना।
- परामर्श एवं निर्देशन के दौरान बरती जाने वाली सावधानियों की जानकारी देना ताकि विद्यालय हेड (मुखिया/नेता) आवश्यकतानुसार अनुसार उनका पालन कर सकें।

विद्यालय स्तर पर परामर्श एवं निर्देशन से जुड़े कुछ पहलुओं जिसे विद्यालय हेड (मुखिया/नेता) को सुलझाना होता है, समस्या का समाधान देना होता है :–

- 10वीं कक्षा में पढ़ने वाले सुरेश, रोहित कलिका यह जानना–समझना चाहते हैं कि उन्हें आगे क्या करना चाहिए? आप उनके लिए किसकी व्यवस्था करेंगे– परामर्श या निर्देशन की।
- नचिकेता का मन अब पढ़ाई में नहीं लगता। वह अक्सर गुमसुम रहने लगा है। उसे किसकी ज्यादा जरूरत है? परामर्श या निर्देशन की?
- 12वीं कक्षा के विद्यार्थी यह जानना–समझना चाहते हैं कि आगे उनके लिए कौन–से व्यवसायों की संभावना है, जो कम लागत में जल्दी से अपने पैरों पर खड़ा होने में मदद करें? आप क्या करेंगे?

- अनामिका दिन प्रतिदिन कक्षा कार्यों में पिछड़ती जा रही है। वह पहले से अधिक आक्रामक हो गई है। आप उसके इस परिवर्तन के कारण को जानने के लिए क्या करेंगे?
- क्या परामर्श एवं निर्देशन की कुछ आचार संहिता होनी चाहिए? वह कौन–सी आचार संहिताएँ हैं और उनकी जरूरत क्यों है?
- परामर्शदाता और परामर्श लेने वाले व्यक्ति के बीच संबंधों में क्या सर्वाधिक जरूरी है और क्यो?
- क्या परामर्श और निर्देशन विशिष्ट बच्चों के लिए ही होता है?

आधुनिक युग में भौतिकवादी विचारधारा की प्रबलता के कारण व्यक्तियों में अपनी अवस्थाओं को लेकर असंतोष उत्पन्न हो गया है। समाजिक जटिलता और काम की व्यस्तता ने जीवन के मार्ग को और अधिक जटिल तथा मानसिक दबाव युक्त बना दिया है।

पहले लोगों का जीवन सहज, सरल था। लोगों में सादा जीवन और उच्च विचार का आदर्श था। औद्योगिक क्रांति और भौतिक उन्नति के कारण अनेकानेक सामाजिक परिवर्तन हुए। फलस्वरुप मानव के रहन–सहन की शैली और जीवन के आदर्श भी बदल गए। तीव्र गति से बदलते हुए समाज में आदर्श भी बदल गए। तीव्र गति से बदलते हुए समाज ने जीवन जीने की मार्ग को अधिक जटिल बना दिया। इन जटिलताओं के बीच सुखद जीवन बिताने के लिए मानव को कोई सरल मार्ग खोजना पड़ता है। जो व्यक्ति काँटो से होकर गुजरने की कला जानता है, वह जटिल समस्याओं के साथ समझौताकर अपने आपको समायोजित कर लेता है और जीवन जीने की राह खोज लेता है। इसके विपरीत जो व्यक्ति समस्याओं से जूझना

नहीं जानता, वह अपने तथा समाज दोनों के लिए हानिप्रद सिद्ध होता है। ऐसे व्यक्तियों के लिए एक सलाहकार (Counselor) की आवश्यकता होती है।

विकास की अवस्था में सामान्यतः विद्यार्थियों में अपनी आवश्यकताओं, आकांक्षाओं का स्पष्ट ज्ञान का अभाव रहता है। उन्हें मित्र बनाने व्यक्तिगत, सामाजिक और मूल्यों संबंधी मुद्दों के समाधान में, अध्ययन संबंधी समस्याओं को सुलझाने में तथा परीक्षा संबंधित दबाव, समय प्रबंधन, पाठ्यक्रम चयन, व्यवसाय चयन, चिंता, विषाद, आत्महत्या, विद्यालय त्याग, कर्त्तव्य विमुखता, नशीली दवाओं के सेवन, मद्यपान, बाल एवं यौन संबंधी शोषण, एच. आई. वी. तथा एड्स आदि अनेकों समस्याओं के समाधान हेतु सहायता की विशेष आवश्यकता अनुभव होती है। विद्यार्थियों की विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तथा उनके अपेक्षित आयोजन हेतु विद्यालयों में **मार्गदर्शन और परामर्श** सेवाओं की सेवाओं की अत्यंत आवश्यकता है।

मार्गदर्शन और परामर्श सेवाओं की आवश्यकता तथा महत्व को विशेषकर हमारे राज्य के लिए कोई भी शिक्षाविद् अस्वीकार नहीं कर सकते। आज जिस संक्रमण काल से हम गुजर रहे हैं, हमारे राज्य के लिए मार्गदर्शन और परामर्श जरूरत ही नहीं बल्कि परम आवश्यक है। इसलिए इस विषय पर हमें चिंतन करने की आवश्यकता है। पूर्व में हम असफल क्यों हुए? इसपर पुनः विचार–मंथन करने की आवश्यकता है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय शैक्षिक विकास के इतिहास के अध्ययन से पता चलता है– हमारे पूर्वजों द्वारा भी इस विषय को महत्व प्रदान किया गया है जिसे भिन्न–भिन्न आयोगों के सिफारिशों के माध्यम से देखा जा सकता है–

[Mudaliar Education Commission (1952-53)]

- Guidance as centrally sponsored Scheme
- Setting up of state guidance bureaus/unit
- DEPFE, NCERT given the leadership and training functions.

[Kothari Education commission (1964-66)

- Emphasized guidance for all school stages.
  (Elementary to senior secondary)
- ·Nationwide framework for school/ district/state levels.

[New Education Policy (1986) & POA (1992)]

- Guidance services linked to
- Vocationalisation of education.
- Improving education of girls.
- Novodaya Vidalayas.
- Vocational education for girls.
- Technical and management of education

[LNCF 2000]

Recommended

- Guidance counsellor for every Secondary school.
- visiting school counsellor for cluster of 3 to 4 Schools.
- career teacher for secondary school tell a counsellor is appointed.

[NCF 2005: Implications for Guidanced counselling In line with previous policy documents

NCF 2005 emphasis on

- Bringing all children to school (Universali- sation of elementary education
- Retaining children in school
- Improving quality to enable children experience dignity and confidence to learn. and achieve success in school.

[Role of State level organisation/NGO etc]

- SCERT to take step to strengthe the guidance bureaus / Units as resource centres.
- Production of Psychological tools/ tests, career literature etc.
- counselling services to be made available at district/ block and school levels.

पाठ्य चर्चा का क्रियाशील के अंतर्गत मार्ग निर्देशन एवं परामर्श

बढ़ती हुई तनावपूर्ण जीवनशैली और बड़े होने के पूर्व बच्चों के सामने मौजूद विकल्पों को देखते हुए मार्गनिर्देश एवं परामर्श महत्वपूर्ण बन गए हैं। अध्ययन का बोल, अच्छा प्रदर्शन की चिंता और प्रतिस्पर्धा तनाव पैदा करते हैं जिन्हें झेलना कुछ बच्चों के लिए बहुत मुश्किल होता है। कुछ बच्चे विषाद के शिकार हो जाते हैं और कुछ तो नशीली दवाओं तक का सेवन करने लगते हैं। उन्हें मनोवैज्ञानिक सहायता और परामर्श की आवश्यकता होती है। वास्तव में बच्चों के साथ अंतःक्रिया करते समय प्रत्येक अध्यापक को परामर्शी की भूमिका अदा करनी होती है। इसलिए इसे आनंददायक शिक्षण कार्यक्रम की पाठ्यचर्या में शामिल किया जाना चाहिए।

माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम का विकल्प अचानक बहुत बढ़ जाता है और युवा लड़के–लड़कियों के लिए तय करना कठिन हो जाता है कि उन्हें किस विषय का चयन करना चाहिए? शिक्षा के स्तर पर कैरियर के बारे में मार्गनिर्देश बहुत महत्वपूर्ण बन जाता है। हालाँकि सिर्फ वही अध्यापक इस प्रकार का मार्गनिर्देश

प्रदान कर सकते हैं जिन्हें बच्चों की अभिरुचि का पता लगाने की क्षमता के साथ–साथ आज के जमाने में काम के बढ़ते अवसरों की जानकारी भी हो। अतः माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तरों पर विशेष योग्यता या ज्ञान वाले अध्यापकों की आवश्यकता है जो उपर्युक्त मार्गनिर्देश एवं परामर्श प्रदान कर सकें। इस लिहाज से अपेक्षित योग्यता धारी अध्यापकों की बहाली की जा सकती है अथवा कुछ अध्यापकों को इसके लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जा सकता है। राज्य शैक्षिक शोध एवं प्रशिक्षण परिषद एक मार्गनिर्देश ब्यूरो बना सकता है जो अध्यापकों को परामर्श कला में प्रशिक्षित कर सकता है।

प्राथमिक विद्यालय

मार्गदर्शन एवं परामर्श को सफल तथा प्रभावी बनाने के लिए यह आवश्यक है कि इस कार्यक्रम की शुरुआत प्राथमिक विद्यालय स्तर से की जाए। शिक्षकों को चाहिए कि वे स्वयं विषय प्रशिक्षण लेने के बाद प्राथमिक स्तर से ही बच्चों को उपर्युक्त मार्गदर्शन एवं परामर्श देना शुरू कर दें ताकि बच्चों के नैसर्गिक गुणों को विकसित करने, उनमें अच्छी आदतें डालने एवं उन्हें खुद को परखने का एक बेहतर वातावरण दिया जा सके। प्रारंभिक स्तर पर मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम के निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्य होते हैं–

- घर से स्कूल में छात्रों का संतोषजनक समायोजन करवाने में सहायता करवाना।
- मूलभूत शैक्षिक कौशलों को सीखने में आ रही कठिनाइयों को दूर करने में सहायता करना।

- संभावित विद्यालय छोड़ने वाले विद्यार्थियों की पहचान कर उसे विद्यालय में ठहराए रखने के लिए परामर्श देना।
- विद्यार्थियों को शैक्षिक जीवन की अच्छी शुरुआत करने में मनोवैज्ञानिक रूप से सहायता करना।
- शिक्षा से अधिकाधिक लाभ उठाने में विद्यार्थियों को सहायता प्रदान करना।
- विद्यार्थियों को माध्यमिक विद्यालयों में प्रवेश के लिए शिक्षा या प्रशिक्षण की योजना बनाने में सहायता करना।

माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर मार्गदर्शन एवं परामर्श की सेवाएँ बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस स्तर पर मार्गदर्शन एवं परामर्श का विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित है–

- विद्यार्थियों को अपनी क्षमताओं (दुर्बलता और शक्तियों) को समझने के योग्य बनाना।
- विद्यार्थियों को शिक्षा के उद्देश्यों की ओर ध्यान आकृष्ट करने में सहायता करना।
- विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति समुचित उत्साह उत्पन्न करने में सहायता करना।
- विद्यार्थियों में अध्ययन की अच्छी आदतों का विकास एवं व्यक्तिगत कठिनाइयों को दूर करने में उनकी सहायता करना।

- विद्यार्थियों को समुचित संचित अभिलेखों, परीक्षण, परिणामों आदि के माध्यम से सूचनाएँ उपलब्ध करवाकर उसके प्रति जागरूक करना।
- विद्यार्थियों को किशोरावस्था में होने वाली शारीरिक परिवर्तनों से उत्पन्न शारीरिक, मानसिक समस्याओं के समाधान में मदद करना।
- विद्यार्थियों को विद्यालय और घर में व्यक्तिगत और सामाजिक समायोजन का समस्याओं के समाधान में भी सहायता करना।
- शैक्षिक और व्यवसायिक अवसरों तथा आवश्यकताओं के बारे में सूचना इकट्ठा करने के योग्य बनाने में सहायता करना।
- क्षेत्र भ्रमण, कैरियर प्रदर्शनी, कैरियर कॉफ्रेंस के माध्यम से कैरियर के बारे में सूचना संग्रह करना।
- विद्यार्थियों को सही कैरियर चुनने में मदद करना।

निष्कर्ष :–

- विद्यालय नेता परामर्श और निर्देशन की समझ विकसित करते हुए अपने विद्यार्थियों को परामर्श एवं निर्देशन की सेवाओं का लाभ पहुँचा सकेंगे।
- विद्यार्थियों के सामान्य एवं शैक्षणिक जीवन को उचित दिशा दे सकेंगे।
- विद्यार्थियों को उनकी क्षमताओं से परिचित कराते हुए निर्णय लेना, तार्किक चिंतन, स्वजागरूकता आदि जीवन कौशलों का विकास कर सकेंगे।